कथा सरिता

जैसे को तैसा

सोहन और राकेश दो पड़ोसी थे। दोनों ही खेती करते थे। रतनपुर गांव में लोग सोहन की बातों की बहुत कद्र करते थे। उनका मानना था कि सोहन की सलाह उपयोगी होती है लेकिन राकेश को यह बिल्कुल पसंद नहीं था। वह हर संभव सोहन को नीचा दिखाने का प्रयत्न करता था। एक बार गांव में रामनवमी का उत्सव था। मंदिर में आयोजन को लेकर चर्चा चल रही थी। चर्चा में सोहन के अतिरिक्त अन्य लोगों में विक्रम भी था। सोहन जो भी सलाह देता विक्रम उसे काट देता। एक-दो बातों पर तो सोहन ने ध्यान नहीं दिया लेकिन बार-बार ऐसा होने पर उसने चुप रहना उचित समझा। वहीं बैठे राकेश ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा, क्या हुआ? सोहन चुप क्यों हो गए? अपनी सलाह क्यों नहीं दे रहे। सोहन ने जवाब दिया जब स्थिति हमारे अनुकूल न हो तो चुप रहने में ही भलाई है। राकेश ने सोहन को भड़काने की नीयत से बोला, तुम्हारी बात नहीं मानी इसलिए नाराज हो गए। सोहन ने सहजता से जवाब दिया, मित्र गरीब की नाराजगी उसे ही नुकसान पहुंचाती है। राकेश बोला, समझ गया तुम्हारा बड़प्पन कोई नहीं मानना चाहता इसलिए क्या तुम श्रीराम के उत्सव में भाग नहीं लोगे? इस पर सोहन ने जवाब दिया, राकेश भगवान के विवाह पर कौन छोटा और कौन बड़ा। उनके लिए तो सब समान है। इस बार विक्रम राकेश के सुर में सुर मिलाते हुए कहावत के रूप में बोला, सबको समान मानते हो, हर कोई पालकी में बैठेगा तो पालकी ढोएगा कौन? इसके बाद उसने यह सोचकर कि उसकी बात की प्रशंसा होगी, सबकी तरफ देखा, लेकिन इस बार एक बुजुर्ग जो सारा माजरा समझ रहे थे उन्होंने विक्रम की बात का जवाब दिया, बेटा तेरे जैसा कोई न कोई तो होगा ही। बुजुर्ग की बात पर वहां बैठे लोग हंस पड़े। अब राकेश और विक्रम के चेहरे देखने लायक थे।

उचित बंटवारा

राम और बलराम जुड़वां भाई थे। दोनों स्वभाव और कदकाठी में बिल्कुल अलग थे। राम लंबा और दुबला-पतला था। वह मिलनसार था, परंतु बलराम मोटा था और उसे किसी से बात करना अच्छा नहीं लगता था। वह गुस्सैल भी था। दोनों में नहीं बनती थी। एक दिन उन्हें साथ ही दूसरे शहर जाना पड़ा। माँ ने उनके लिए अलग-अलग खाना बनाकर रख दिया था। जंगल के रास्ते से गुजर रहे थे। खाना खाने के लिए वे एक पेड़ के नीचे रूके। वहां कुछ और राहगीर भी थे। दोनों ने खाने का डिब्बा खोल लिया। राम के डिब्बे में तीन और बलराम के डिब्बे में दो रोटियां थी। माँ ने शायद उनके डील-डौल के अनुसार ही ऐसा किया होगा परंतु यह देखकर बलराम को बहुत गुस्सा आया। तभी वहां एक आदमी आया और बोला, मैं रास्ता भूल गया हूँ। मुझे बहुत भूख लगी है। मेरे पास पैसे हैं। आप लोग यदि खाने में से थोड़ा-सा मुझे दे देंगे तो मैं उसका दाम दे दूंगा। दोनों भाई राजी हो गए। तीनों ने मिलकर खाया। इसके बाद उस आदमी ने पांच चांदी के सिक्के दिए और उन्हें धन्यवाद देकर चला गया। राम ने दो सिक्के बलराम को दिए और तीन स्वयं रख लिए। बलराम को यह देख गुस्सा आ गया। वह बोला, हम दोनों ने ही उसे खाना खिलाया था इसलिए बराबर का हिस्सा होना चाहिए। मुझे आधा सिक्का और दो। राम बोला, मेरे पास तीन रोटियां थीं इसलिए मुझे तीन और तुम्हें दो मिलने चाहिए। तुम खुश नहीं हो तो मैं तुम्हें आधा सिक्का दे दूंगा पर मेरे पास अभी खुले नहीं हैं। बलराम तुरंत देने की जिद करने लगा। राम पास बैठे राहगीर के पास खुले पैसे लेने गया। वह उनकी बात सुन रहा था। वह बोला, मैं तुम लोगों का बंटवारा कर सकता हूँ। बलराम बोला, ठीक है, आप न्याय करें। राहगीर बोला, तुम दोनों के पास कुल पांच रोटियां थीं। तीन लोगों ने बराबर रोटियां ली, इसका मतलब कि हर रोटी के तीन हिस्से हुए। इस तरह कुल पंद्रह टुकड़े हुए। बलराम के पास दो रोटियों के छह टुकड़े थे और उसने पांच टुकड़े खाए। इस प्रकार उस आदमी को राम ने चार टुकड़े और बलराम ने एक ही खिलाया। इस हिसाब से राम को चार और बलराम को एक सिक्का मिलना चाहिए। इस पर बलराम ने चुपचाप एक सिक्का भाई को लौटा दिया।

जापानी छात्रों की देशभक्ति

एक बार की बात है स्वामी रामतीर्थ अमेरिका जा रहे थे। वे जिस जहाज पर सवार थे, उसी में लगभग डेढ़ सौ जापानी छात्र भी अमेरिका जाने के लिए सवार थे। स्वामीजी का उनसे परिचय हुआ और वे छात्र स्वामीजी के ज्ञान से बहुत प्रभावित हुए। उन छात्रों में से कई अत्यंत धनी परिवारों से ताल्लुक रखते थे। स्वामीजी ने बातों-बातों में उनसे पूछा - आप अमेरिका पढ़ने के लिए जा रहे हैं? सभी ने स्वामीजी को बताया कि वे विशेष अध्ययन के लिए अमेरिका जा रहे हैं। तब स्वामीजी ने उन छात्रों से सहज ही प्रश्न किया - अच्छा यह बताइए आप काफी दिनों तक अमेरिका में रहेंगे, तो उसके लिए धन की व्यवस्था आप सभी के पास है? स्वामीजी के प्रश्न का उन छात्रों ने उत्तर दिया - स्वामीजी! हम तो जहाज का किराया भी घर से लेकर नहीं चले हैं। जहाज में कुछ काम करके उसका किराया दे देंगे और अमेरिका में भी अपनी पढ़ाई का खर्च कोई नौकरी करके उठाएंगे। अपने राष्ट्र का धन व्यर्थ विदेशों में क्यों खर्च करें? स्वामी रामतीर्थ ने देखा कि वे सभी छात्र जहाज में सफाई आदि छोटे-मोटे काम करके जहाज का किराया जुटा रहे थे। उनका देशप्रेम देखकर स्वामीजी बहुत प्रसन्न हुए और सोचा कि काश विदेशों में पढ़ने वाले भारतीय छात्र भी ऐसी सोच रखें, तो भारत को संपन्न राष्ट्र बनते देर नहीं लगेगी। कथा का सार यह है कि देश के संसाधनों का विवेकसम्मत उपयोग ऐसी राष्ट्रसेवा है, जिससे राष्ट्र शीघ्रगामी प्रगति की ओर उन्मुख होता है।

विवेक भी जरूरी

आदमी ने देखा - उद्यान में एक ओर वृक्ष हरे-भरे हैं, दूसरी ओर सूखे हैं। उसने माली से पूछा, भाई! क्या बात है? एक ओर पेड़-पौधे हरे-भरे हैं, फल-फूल से लदे हुए हैं, दूसरी ओर बिल्कुल शुष्क पड़ा है। क्या तुमने इस ओर ध्यान नहीं दिया? माली बोला, महाशय! मैंने ध्यान तो दिया पर क्या करूं? एक दुर्घटना घट गई। क्या दुर्घटना घटी? मुझे किसी कारणवश बाहर जाना पड़ा। मैंने छोटे लड़के से कहा, तुम बगीचे का पूरा ध्यान रखना। वह उसमें प्रतिदिन पानी सींचने लगा। एक दिन उसके मन में विकल्प उठा, ये पौधे छोटे हैं और ये पौधे बड़े हैं। सब पौधों की ऊंचाई समान नहीं है और मैं सबको बराबर पानी दे रहा हूँ। सबको समान पानी देने का मतलब क्या है? जिसकी जड़ जितनी बड़ी है, उसको उतना ही पानी देना चाहिए। उसने सोचा, पेड़ों की जड़ का पता लगाना होगा। उसने जड़ की खुदाई शुरू कर दी, जड़ को नापना शुरू कर दिया। खुदाई कर उसने सारे पेड़ों को उखाड़ दिया, सबकी जड़ें नाप ली। चार्ट बना लिया, इस पौधे की इतनी बड़ी जड़ है और उस पौधे की इतनी बड़ी है। उसने उस चार्ट के हिसाब से पौधों को पानी देना शुरू किया किन्तु पौधे सूखते ही चले गए। उसकी बुद्धिमता और विवेक से मूल उपादान ही नष्ट हो गया। जब तक उपादान है, तब तक पानी और खाद का महत्व है। यदि उपादान ही नहीं है तो कोई कार्य बनता ही नहीं है। ये सब निमित्त हैं और उपादान के होने पर ही सहायक बनते हैं।

दया यज्ञ

एक गृहस्थ ने तीन यज्ञ किए। इसमें सारा धन समाप्त हो गया। गरीबी ने उसे घेर लिया। उसका दु:ख देखकर किसी विद्वान ने कहा, तुम अपने यज्ञ का पुण्य धर्मराज सेठ को बेच दो, तो उतने भर से तुम्हारा काम चल जायेगा। उसकी बात मानकर वह गृहस्थ चल पड़ा। रास्ते में खाने के लिए रोटियां बांध ली। चलते-चलते रास्ते में एक कुतिया मिली, जिसने बच्चों को जन्म दी थी। उसके पास खाने के लिए कुछ नहीं था। वह भूख से दम तोड़ रही थी। उस गृहस्थ को उसे देखकर दया आ गई। परिणामत: उसने अपने पास की सारी रोटियां उसे खिला दीं, जिससे वह चलने-फिरने लायक हो गई। गृहस्थ को सेठ के पास तक पहुंचने में तीन दिन तक भूखा रहना पड़ा। जाते ही धर्मराज ने पूछा, तुम्हारे चार यज्ञ हैं, इनमें तुम किन्हें बेचना चाहते हो? गृहस्थ ने कहा, मैंने तो तीन ही यज्ञ किए हैं। चौथा दया यज्ञ तो तुमने अभी-अभी रास्ते में ही अपनी रोटियां कुतिया को खिलाकर किया है। उसका पुण्य तीनों के बराबर है। अब गृहस्थ ने पिछले तीनों यज्ञ बेच दिए। उससे जो भी मिला, उसे लेकर आए दिन दया यज्ञों का अवसर ढूंढने लगा। जब भी अवसर मिलता, उसी में खर्च करता। अब दरिद्रता शेष न रही।

जयपुर, राजापार्क। 'फ्यूचर ऑफ पॉवर' का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मंत्री जितेंद्र सिंह, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.करूणा, उद्योपति निजार जुमा, ब्र.कु.पुनम बहन तथा अन्य।

बदलापुर। उत्तरप्रदेश के कैबिनेट मंत्री पारसनाथ यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.आरती बहन।

मोहाली। 'आपदा प्रबंधन' कार्यक्रम को सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.भरतभूषण, ब्र.कु.रमा बहन, तथा रैनबैक्सी कंपनी के सदस्य।

नाभा। 'राजयोग का प्रशिक्षण' देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं सूबेदार मेजर सुरेश कुमार, ब्र.कु.गुलशन बहन, ब्र.कु.हरप्रीत बहन तथा अन्य।

नांग्लडैम। 'आपदा प्रबंधन में सकारात्मक चिंतन का महत्व' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एन.एफ.एल. के चीफ जनरल मैनेजर अजस कोहली, ब्र.कु.रमा बहन, ब्र.कु.सुमन बहन, ब्र.कु.भरत भूषण।

अमरेली। चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं मनु भाई पाटीदार, भूपेन्द्र भाई वैश्य, ब्र.कु.रशीला बहन, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य।